International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.5, Issue-1, January, 2018
Impact Factor: 6.023; Email: drtvramana@yahoo.co.in

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित समाज

Dr.Kumara Nageswara Rao
Head of the Department of Hindi
Sri Y.N.College (A)
Narsapur-534275, W.G.Dt.

अमृतलाल नागर का जन्म 17 अगस्त 1916 ई. को उत्तर प्रदेश के आगरा नगर के गोकुलपुरा मुहल्ले में एक प्रतिष्ठित नागर ब्राह्मण परिवार में हुआ। नागरजी के पिता के गाँधीवादी विचारों, नैतिक संस्कारों एवं उच्चादर्शों का उसके व्यक्तित्व परिष्कार में अमिट योगदान रहा है। जीवन के प्रारंभिक दिनों में जिस आचार-विचार का बीज उनके संस्कारों में पनपता रहा वह अपने साहित्यिक जीवन में पूरी तरह से पल्लवित हो चुका है। सन् 1940 में नागरजी भी फिल्म सिनेरियो लेखक के रूप में बम्बई चले गए। फिल्म जगत् बम्बई से सम्बन्ध विच्छेद करने के पश्चात् नागरजी स्वतन्त्र साहित्य-चिन्तन एवं लेखन में प्रवृत्त हुए। उपन्यास के क्षेत्र में उनका प्रथम प्रयास बंगाल के अकाल के पृष्ठभूमि में रचित "महाकाल" के रूप में साहित्य जगत् के सम्मुख आया। यह उपन्यास नागरजी की यथार्थमूलक, सामाजिक दृष्टि का परिचायक है। इस कृति ने नागरजी को हिन्दी जगत में पर्याप्त प्रसिद्धि दिलाई। उन्होंने सन् 1955 में एक बहुचर्चित उपन्यास "बूँद और समुद्र" की रचना की जो उनकी कीर्ति का स्तम्भ सिद्ध हुआ।

नागरजी का लेखकीय व्यक्तित्व एक प्रतिभा-सम्पन्न, ईमानदार महत्वाकांक्षी, जिजीविषावादी, आस्थावादी और संघर्षों में पलनेवाले कर्मनिष्ठ कलाकार का है। वे एक प्रयोगधर्मी लेखक थे। उपन्यास, कहानी, और नाटक के क्षेत्र में उन्होंने अनेक सामयिक प्रयोग किए हैं। नागरजी बहुभाषाविद् थे। हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, तमिल और उर्दू पर उनका अधिकार था। गुजराती उनकी मातृभाषा थी, किन्तु अपने को अहिन्दी भाषी कहलवाना उन्हें पसन्द नहीं था।

"महाकाल" नागरजी की प्रथम औपन्यासिक कृति है। यह बंगाल के दुर्भिक्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित मध्यवर्गीय समाज की विवशता, पीड़ा, संघर्ष, घृणा, अन्तर्द्वन्द्व और आर्थिक विपन्नता की यथार्थमूलक करुण गाथा है। "सेठ बांकेमल" 112 पृष्ठों का एक लघु उपन्यास है। धारावाहिक कथा और सुनियोजित चरित्र के अभाव में भी छोटे-छोटे रोचक

प्रसंगों की श्रृंखला इसे उपन्यास का रूप प्रदान करती है। "बूँद और समुद्र" नागरजी का तीसरा उपन्यास है जो आन्तरिक दृष्टि से प्रतीकात्मक मालूम पड़ता है। वस्तुतः यह उपन्यास यथार्थ जीवन का प्रतीक है। जिसमें यथार्थ जीवन की चेतना के सत्-असत् पक्ष एवं सामान्य भारतीय मध्यवर्गीय जीवन का सजीव चित्र अंकित है। लेखक ने भूमिका में स्वयं कहा है "इस उपन्यास में मैंने अपना और आपका - अपने देश के मध्यवर्गीय नागरिक समाज का गुण-दोष भरा चित्र ज्यों-का-त्यों आँकने का यथाशक्ति यथासाध्य प्रयल किया है, अपने और आपके चरित्रों से इन पात्रों को गढ़ा है।"[1]

'शतरंज के मोहरे' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। उसमें नागरजी ने अवध के नवाबी शासन की 1820 ई. से लेकर 1837 ई. तक (गाजी उद्दीन हैदर और नसरुद्दीन हैदर का शासनकाल) की घटनाओं का चित्रण किया है। "शतरंज के मोहरे" के मूलकथा नवाब गाजीउद्दीन हैदर और नसीरुद्दीन हैदर के जीवन और शासन पर आधारित है। उनकी नानाविध विसंगतियों, अवरोधों और कुचक्रों के कारण उत्पन्न शासन-व्यवस्थागत दुर्बलताओं का विस्तृत लेखा-जोखा है। दक्षिण भारत की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित उपन्यास है 'सुहाग के नुपूर'। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान सामाजिक समस्याओं का छायांकन इसमें प्राप्त है।

एक त्रिकोण प्रेम के माध्यम से सामाजिक समस्याओं, राजनीतिक संघर्षों, संस्कृति और कला के विविध रूपों का सांगोपांग चित्रण "सुहाग के नूपुर" उपन्यास में किया गया है। अमृत और विष उपन्यास में अंकित समाज, विक्टोरिया युग से लेकर आज तक की अपने सम्पूर्ण क्रियाकलापों के साथ मूर्त हुआ है। भारतीय मध्यवर्गीय समाज के विभिन्न वर्गों के अनुरूप समस्याएँ और धरातल उपन्यास की भूमि को सशक्त बनाने में सक्षम है। 'सात घूँघटवाला मुखड़ा' ऐतिहासिक उपन्यास है। इतिहास के एक रहस्यमस चरित्र बेगम समरु के इतिहास सम्मत तथ्यों को प्रचलित किंवदंतियों के कल्पनागम रोचक रूप देकर इसका कथा संगठन किया गया है। इस उपन्यास में बेगम समरू के व्यक्तिगत अन्तर्द्वन्द्व और राजनीतिक दॉव-पेचों का

[1] अमृतलाल नागर - बूंद और समुद्र - पृ.3

चित्रण है। "एकदा नैमिषारण्ये" आर्यावर्त से भारतवर्ष बनने की शोधयात्रा है। यह भारतीय राष्ट्रीयता की भावना की विकास गाथा ही नहीं, बल्कि हिन्दू धर्म के मूल स्वरूप की इतिहास गाथा है।

एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरातल पर अवस्थित भक्त मनीषी का जीवन वृत्त अंकित करना नागरजी के वैज्ञानिक मानस का चाह था जिसकी परिणति है "मानस का हंस"। रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तिगत जीवन का तथ्य अंधकार में ही है। उनकी रचनाओं में किंचित् आभास से किंवदन्तियों की अनेकानेक रेखाएँ निर्मित हो गई हैं। नागरजी ने मानस चतुरशती के अवसर पर तुलसीदास के जीवनवृत को ऐतिहासिक परिवेश देकर भी आधुनिक भावभूमि दी है। नागरजी का बहुचर्चित उपन्यास है "नाच्यौ बहुत गोपाल"। यह समाज के गर्हित कहे जानेवाले वर्ग मेहतर जाति और सवर्णों के इर्द-गिर्द बँधी हुई मोटी जकड़-बन्दी और उस दीवार के दोनों ओर के अपने-अपने पोसे हुए अहं और मिथ्याचार का जीता जागता आलेख है। आज की नौकरशाही तथा तज्जन्य भ्रष्टाचार का चित्र प्रस्तुत करनेवाला नागरजी का एक उपन्यास है "बिखरे तिनके"। आज उच्च अधिकारी वर्ग से लेकर छोटे लोगों तक जिस भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी का बोलबाला है इसका यथार्थ अंकन उपन्यास में दिखाई देता है। "अग्निगर्भा" एक शुद्ध सामाजिक समस्यामूलक उपन्यास है। "अग्निगर्भा" में एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की युवती सीता का आत्मसंघर्ष चित्रित किया गया है। इस उपन्यास का मूल कथ्य आधुनिक समाज की विसंगतियों पर आधृत है। करवट भारतीय आधुनिकता के सूत्रपात का इतिहास प्रस्तुत करनेवाला एक मूल्यवान उपन्यास है। इस कथानक के द्वारा अमृतलाल नागर ने भारत में अंग्रेजी राज्य जमने, की, प्राचीन अन्धविश्वासी संस्कृति के नष्ट होने की, प्रगतिशील जीवन पद्धतियों के आरम्भ होने की तथा अंग्रेजियत का प्रभाव व श्रेष्ठता का सिक्का जमने की पूरी कथा विस्तार से दे दी है।

'पीढ़ियाँ' अमृतलाल नागरजी का उपन्यास है जो उन्होंने अपने निधन से कुछ दिन पहले ही समाप्त किया था। यह उपन्यास एक बड़े कैनवास पर अनेकानेक पात्रों और वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। इसमें एक पूरी

सदी के समाज का सजीव चित्रण है और भारत की स्वतन्त्रता-चेतना के उतार-चढ़ाव की मर्मस्पर्शी कहानी है। नागरजी सामाजिक परिवेश के प्रति अत्यधिक संवेदनशील कलाकार हैं, इसीलिए उनके उपन्यासों में विशद् एवं गहन सामाजिक यथार्थ का चित्रण प्रस्फुटित हुआ है। नागर जी समाज से प्रतिनिधि पात्रों का चयन करते हैं, और युग सत्य को उन्हीं की गतिविधियों-संवादों के द्वारा व्यक्त करते हैं। नागरजी के उपन्यासों में वर्ग विभाजन बहुत ही स्पष्ट है। सामाजिक परिवेश को वर्गों में बाँटकर जीवंत किया गया है। उनके उपन्यासों में आए वर्गीय चित्रण को ऊपर उद्धृत तीनों वर्गों के आधार पर ही परखा जा सकता है। अपने उपन्यास "महाकाल" में वे दयाल जमींदार और मेनाई महाजन को महाकाल के समय में भी दुष्टता करते दिखाते हैं और बताते हैं कि महाकाल के ईश्वरीय कारण जो भी रहे हों, लेकिन मानवी कारण भी कम नहीं हैं जो मेनाई और दयाल जैसे नर-पिशाचों की देन है। सारा गाँव अकाल की विनाश लीला से ग्रस्त है। नागरजी ने उस अकाल में मानवीय पीड़ा के दर्शन किए। उस स्थिति पर दुख व्यक्त करते हुए वे कहते हैं - "रईसों और अफसरों की दुनिया में क्या इन इन्सानों को कोई इन्सान मानेगा? वे इन्हें भूत कहेंगे। हालांकि वे खुद मूर्दा इंसानियत के भूत बनकर हमारे सिरों पर सवार हैं। हमारी भूख की नींव पर उन्होंने अपनी सोने की हवेलियाँ बनवाई हैं।"[2] "बूँद और समुद्र" के सरदवारिका दास, सेठ रूपरतन, "अमृत और विष" के सेठ रूपचन्द, "सुहाग के नूपुर" के कोवलन, मानाइहन, "नाच्यौ बहुत गोपाल" के मसुरियादीन आदि ऐसे उच्चवर्गीय पात्र हैं, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जनता का शोषण करते हैं। ये पात्र नागरजी के कोप-भाजन बने हैं, उनकी संवेदना गरीबों के प्रति है और घृणा उच्च वर्गीय शोषकों के प्रति।

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मध्यवर्ग अपने विस्तृत रूपों में चित्रित हुआ है। उनके दो बृहत् उपन्यासों "बूँद और समुद्र" तथा "अमृत और विष" के नायक मध्यवर्गीय लेखक महिपाल और अरविन्द शंकर हैं। दोनों पात्रों के माध्यम से नागरजी ने मध्यवर्गीय जीवन की विराट झाँकियाँ प्रस्तुत

[2] अमृतलाल नागर - महाकाल की भूमिका - पृ.3

की हैं। मध्यवर्गीय जीवन की यह कैसी विडम्बना है कि नौकरी करके भी स्त्री स्वतन्त्र नहीं रह सकती। नागरजी इस तथ्य से परिचित कराते कि जब तक समाज में सामन्ती मानसिकता समाप्त नहीं होगी तब तक नारी की स्वतन्त्रता की कल्पना करना बेमानी है। सीता जैसी आत्मनिर्भर स्त्री सामन्ती मानसिकता के कारण पति के क्रूर नियंत्रण में रहती है। सीता अन्तिम स्थिति तक सब कुछ सहती है, लेकिन आगे बढ़ने का विद्रोह करती है, "सच कह रही हूँ। मेरी जीवन दृष्टि अब पूरी बदल चुकी है। इस झूठी दुनिया से अब समझौता करके नहीं, वरन् लड़कर जीना चाहती है। .....इस लड़ाई में मैं अकेली नहीं हूँ। मेरे साथ अब बहुत-सी दबी-कुचली-आत्माओं का स्वाभिमान भी इकट्ठा हो रहा है।"[3] मध्यवर्गीय जीवन की जितनी व्यापक झाँकियाँ नागरजी के उपन्यासों में मिलती हैं, वे सब अन्यत्र दुर्लभ है। लगता है, जैसे वे मध्यवर्ग की हर त्रासदी से सीधे जुड़े हुए हैं और उसे अपने पाठकों को विस्तार से बताना चाहते हैं।

नागरजी के उपन्यासों में निम्न वर्ग बड़ी संख्या में नहीं मिलता। नागरजी मूलतः नौ मध्यवर्ग के लेखक हैं। इसीलिए उनके उपन्यासों में निम्न वर्ग की तलाश करनी पड़ती है, फिर भी जिस रूप में वह मिलना चाहिए नहीं मिलता। निम्न वर्ग का एक नया रूप उनके उपन्यासों में मिलता है कि मध्यवर्ग की दारूण स्थितियों से संघर्ष करता पात्र निम्न वर्ग की सीमा रेखा तक आ जाता है और वहीं का बनकर रह जाता है। ऐसे अनेक पात्र हैं, जो मध्यवर्ग में जन्म लेते हैं, लेकिन आर्थिक परिस्थितियों के कारण निम्न वर्ग में आ जाते हैं। उनके हपले उपन्यास "महाकाल" का नायक पाँचू गोपाल भी इसी प्रकार का पात्र है। "बूँद और समुद्र" का महिपाल भी मध्यवर्ग का है, लेकिन आर्थिक स्थिति के कारण निम्न वर्ग से भी गया गुजरा है। यद्दपि नागरजी ने उसके चरित्र का विकास मध्यवर्ग के रूप में ही किया है लेकिन जिन अभावों की दुनिया में महिपाल रह रहा है, वह निम्न वर्ग की ही है। "शतरंज के मोहरे" उपन्यास की भुलनी निम्नवर्ग की ही पात्र है जो निरन्तर अन्याय और शोषण के शिकार है जिसके लिए जीवन नरक

[3] अमृतलाल नागर - अग्निगर्भा -पृ.149

बनकर रह गया है। ऐसी स्थिति में भुलनी जैसी पात्र का जीवन एक अभिशाप हो गया है। "अमृत और विष" जैसा बृहत् उपन्यास लिखकर नागरजी मध्यवर्ग की हताशा, आकांक्षा, घृणा-प्रेम, जय-पराजय आदि का चित्रण करते हैं। यहाँ निम्न मध्यवर्ग के पात्र हैं, जो अपनी दरिद्रता को दूर करने के लिए अनेक उपाय करते हैं। निम्न वर्ग की जीवंत यात्रा के रूप में नागरजी की सबसे प्रखर सृष्टि "नाच्यौ बहुत गोपाल" उपन्यास की निर्गुनिया है। जन्म से ब्राह्मण निर्गुण मोहन हरिजन से विवाह करके हरिजन बन जाती है। बचपन में पिता की उम्र के बराबर के मसुरियादीन ब्राह्मण के साथ विवाह और योन-तृप्ति के अभाव ने निर्गुण को मोहन मेहत्तर की ओर मोड़ दिया।

निम्न वर्ग और निम्न-मध्य-वर्ग के अनेक पात्र नागर जी के उपन्यासों में अपने सम्पूर्ण चरित्र के साथ विकास पाते हैं और कथा संरचना में अपना अमिट प्रभाव छोड़ते हैं। समकालीन अन्य उपन्यासकारों की तुलना में वह निर्विवाद बता सकता है कि अमृतलाल नागर की समस्त रचनाएँ अपनी सामाजिक-प्रतिबद्धता के कारण अनन्वय है। उनका यह विश्वास पूर्ण है कि व्यक्ति समाज का नियन्ता है।

<u>सहायक ग्रंथ Reference</u> :

1. आज का हिन्दी उपन्यास - डॉ.इंद्रनाथ मदान - राजकमल प्रकाशन - दिल्ली 1960.
2. अमृतलाल नागर के उपन्यास - डॉ.आनंद प्रकाश त्रिपाठी - आनंद प्रकाशन - फैजाबाद 1981.
3. हिन्दी उपन्यास - समाज शास्त्रीय विवेचन - डॉ.चंडी प्रसाद जोशी - अनुसंधान प्रकाशन - कानपुर 1962.
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास मानविय अर्थत्ता - डॉ.नवल किशोर - प्रकाशन संस्थान - दिल्ली 1977.
5. अमृतलाल नागर: भारतीय उपन्यासकार - डॉ.पुष्पाबंसल - दिनमान प्रकाशन - दिल्ली 1987.

6. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य - डॉ.प्रकाशचंद्र मिश्र - साहित्य प्रकाशन - दिल्ली 1985.
7. हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग - डॉ.मंजुलता सिंह - आर्य बुक डिपो - नई दिल्ली 1971.
8. हिन्दी उपन्यास शिल्प - बदलते परिप्रेक्ष्य - डॉ.प्रेम भटनागर - अर्चना प्रकाशन - जयपुर 1968.
9. अमृतलाल नागरः व्यक्तित्व एवँ कृतित्व - डॉ.सुरेश बत्रा - पंचशील प्रकाशन - जयपुर 1979.

पत्र - पत्रिकाएँ :

1. आजकल - जून 1983
2. आलोचना - अक्तूबर 1963
3. धर्मयुग - नवंबर 1980
4. संचेतना - अमृतलाल नागर विशेषांक - 1985

डॉ.कुमार नागेश्वर राव
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
श्री वाई.एन.महाविद्यालय (स्वायत्त)
नरसापुर-534275, प.गो.जिला, आंध्र प्रदेश

Dr.Kumara Nageswara Rao
Head of the Department of Hindi
Sri Y.N.College (A)
Narsapur-534275, W.G.Dt.
e-mail ID: drkumara2011@gmail.com
Cell No.9966469132